अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पृष्ठसंख्या

प्राक्कथन :

प्रथम अध्याय : 01 - 16

जगदीश गुप्तः व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

जीवन परिचय ।

बचपन ।

मेधावी छात्र ।

चित्रकारिता ।

शिक्षा।

शोध - ग्रंथ ।

अध्यापन ।

रचना - सम्मान ।

डॉ. जगदीश गुप्त का कृतित्व ।

अभिरुचियाँ और दिशाएँ ।

कला संदर्भ , शिल्प सहयोग ।

मूर्ति एवं पुरातत्वः विशेष संदर्भ ।

प्रतिनिधिक रचनाओं का परिचय :

शम्बूक , गोपा - गौतम,

छंद - शती, आदिम एकांत,

काव्य सेतु, रीतिकाव्य संग्रह,

नयी कविता : स्वरुप और समस्याएँ ।

निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय 17 - 47

'शंम्बूक' में वर्णित राजनीतिक समस्या ।

अ. निरंकुश राजसत्ता ।

आ. आम जनता से विमुख राजनिति ।

इ. राजनीतिज्ञों का पतन ।

ई. साम्यवाद बनाम राजनीति ।

उ. पतित राजनीति के विरोध में विद्रोह ।

ऊ. युद्ध और राजनीति ।

ए. लोकतांत्रिक मूल्य और राजनीति ।

निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय : 48 - 74

'शम्बुक मे वर्णित सामाजिक समस्या ।

साहित्य और समाज ।

सामाजिक समस्या ।

अ. समाज और वर्णव्यवस्था ।

आ. छुआछूत की समस्या ।

इ सामाजिक विषमता ।

ई. शोषितों की दुर्दशा ।

उ रुढि - परंपरा और अंधविश्वास ।

निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय : 75 - 102

' शम्बूक ' कथा पुरानी व्यथा नई ।

' शम्बूक ' एक खंडकाव्य ।

खंडकाव्य के तत्व ।

'शम्बूक' खंडकाव्य की संक्षेप में कथावस्तु ।

'शम्बूक' कथा पुरानी व्यथा नई ।

राजनीतिक संदर्भ

1. समाजव्यवस्था और राजनीति ।

2. जनता और राजनीति ।

3. लोकनायक और राजनीति ।

4. शोषण और राजनीति ।

5. न्याय और राजनीति ।

6. युद्ध और राजनीति ।

सामाजिक संदर्भ.

1. जातिव्यवस्था ।

2. शोषित-वर्ग ।

3. रुढि - परंपरा और अंधविश्वास ।

निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय : 103 -109

उपसंहार ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्राक्कथन

विषय प्रवेश- व्याप्ति एवं मर्यादा।

पाक्कथन

डॉ. जगदीश गुप्त नई कविता के एक प्रमुख कवि माने जाते हैं । उन्होंने अपने काव्य में यथार्थवादी चित्रण किया है । प्राचीन संदर्भों के सहारे उन्होंने आधुनिक समस्याओं का विवेचन किया है । प्राचीन कथा के माध्यम से आधुनिक राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं का चित्रण करने वाली ' शम्बूक ' उनकी महत्वपूर्ण कृति है ।

शिवाजी विश्वविद्यालय ,कोल्हापूर,(एम्.फिल.) हिंदी विभाग का छात्र होने के नाते प्रस्तुत लघु शोध -प्रबंध को प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक खुशी हो रही है । एम्.फिल. में प्रवेश लेने के पश्चात मेरे सामने शोध प्रबंध के अनेकों विषय थे । मैंने अनेक पुस्तकों में दलितों का चित्रण पढ़ा था । मराठी तथा हिंदी दलित साहित्य पढ़कर मेरे मनमें दलित लोगों के प्रति सहानुभूति निर्माण हुई थी । इसलिए मेरे मन में यह विचार था कि दलित साहित्य के आधार पर कोई विषय चुन लिया जाय तो ठीक होगा । ऐसी अवस्था में डॉ. जगदीश गुप्त जी की 'शम्बूक' कृति मेरे हाथ लगी । तब मैंने मेरे अनुसंधान का विषय निश्चित किया --

"जगदीश गुप्त के 'शम्बूक' खंडकाव्य में वर्णित समस्याओं का अनुशीलन ।"

इस लघु शोध प्रबंध में 'शम्बूक ' में वर्णित समस्याओं का विवचन किया है । शम्बूक खंडकाव्य का अध्ययन करना और उसके बाद इस काव्य में कौनसी राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याएँ हैं इसका शोध लेना यह मेरा उद्देश्य है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध सुविधा की दृष्टि से पाँच अध्यायों में विभाजित है । प्रथम अध्याय है - जगदीश गुप्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व । जगदीश गुप्त नयी कविता के कवि और जाने माने समर्थ समीक्षक भी हैं । अनेक वर्षों तक उन्होंने नयी कविता का संपादन कार्य भी किया । जिस प्रकार वे एक कवि हैं साथ ही सफल चित्रकार भी हैं ।

द्वितिय अध्याय में 'शम्बूक ' में वर्णित राजनीतिक समस्याओं का विवचन किया है । इसमें निरंकुश राजसत्ता, आम जनता से विमुख राजनीति ,राजनीतिज्ञों का पतन, साम्यवाद बनाम राजनीति, युद्ध और राजनीति ,लोकतांत्रिक मूल्यों का –हास आदि विषयों पर विचार व्यक्त किये हैं । आज की राजनीति जनता के हित से जुड़ी हुई नहीं है । राजनीतिक नेताओं द्वारा सुधार के नाम पर जनता का शोषण किया जाता है । जिसके कारण आज की राजनीति जनता से विमुख हो रही है।

तृतीय उध्याय में ' शम्बूक ' में वर्णित सामाजिक समस्याओं का विवेचन है । शम्बूक मे मुख्य रुप से जातिव्यवस्था, शोषितों की दुर्दशा का चित्रण, रुढि - परंपरा और अंधविश्वास इन समस्याओं को कवि ने उठाया है । ये समस्याएँ प्राचीन कालसे समाज में विद्यमान हैं । कवि इन समस्याओं को नष्ट करना चाहते हैं ।

चतुर्थ अध्याय में यह यह स्पष्ट किया है कि 'शम्बूक' की कथा आज की राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति से किस प्रकार जुड़ी हुई है । 'शम्बूक - वध की पुरानी कथा पाठकों के सामने रखना यह कवि का उद्देश नहीं हैं । इस कथा के माध्यम से समाज व्यवस्था, जनता, लोकनायक, शोषण, न्याय, युद्ध, जातिव्यवस्था, रुढि - परंपरा और अंधविश्वास आदि के बारे में आपनें विचार व्यक्त किये हैं । साथ ही 'शम्बूक वध ' की प्राचीन कथा आज के राजनीतिक तथा सामाजिक संदर्भों मे कितनी सही है यह बताया है ।

पंचम अध्याय में उपसंहार है जो कि इस प्रबंध विषय का सार है । अंत में परिशिष्ट दिया गया है । परिशिष्ट के पूर्वार्ध में आधार ग्रंथ और उत्तरार्ध में संदर्भ ग्रंथो की सूची दी गई है । साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशन एवं संस्करण भी दिया गया है ।

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध में राम का उल्लेख एकवचन में किया है । क्योंकि स्वयं कवि ने अपनी रचना में राम का उल्लेख एकवचन में किया है । वाल्मिकी, कालीदास, और भवभूति नें रामकथा को उदात्तता प्रदान की थी । राम को एक आदर्श राजा कें रुप में चित्रित किया है । परंतु ' शम्बूक ' मे राम का वह आदर्श रुप नहीं है ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करने वाले तथा मुझे प्रोत्साहित करने वाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है ।

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध श्रद्धेय डॉ. आनंद वास्कर जी के सूक्ष्म निरीक्षण और निर्देशन का फल है । आपके पथ प्रदर्शन से ही यह शोध कार्य पूर्ण हो सका । आपने समय समय पर मार्गदर्शन कर के प्रात्साहित किया । मैं वक्त बेवक्त आपके घर जाता था और मेरी समस्याएँ सामने रखता था । फिर भी आप मेरा स्वागत प्रसन्न एवं हास्य मुद्रा से करते । डॉ. सौ. वास्कर मॅडम का भी प्रोत्साहन मुझे हमेशा मिलता रहा । आप दोनों का मैं सदैव ऋणी रहूँगा और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मेरे साथ रहेगा ।

अनेक कृतिकारों का अध्ययन भी मुझे लाभप्रद हुआ । अतः उन सभी साहित्यिक प्रतिभाओं के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा दायित्व समझता हूँ ।

आदरणीय पूज्य गुरुवर्य डॉ. व्ही. के. मोरे, डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड प्रा. शरद कणबरकर, डॉ. के. पी. शहा प्रा. तिवले, प्रा. वेदपाठक, प्रा. मुजावर और प्रा. भागवत जी. के. प्रति भी सविनय आभार प्रकट करता हूँ ।

श्री संत गाडगेबाबा कॉलेज के प्राचार्य व्ही. ए. रानडे, जी. के. वात्सल्यपूर्ण स्नेह के लिए भी उनका आभारी हूँ । जो छाया की तरह हमेशा मेरे साथ रही वह मेरी पत्नी सौ. बबुताई, मेरे आदरणीय माता पिता तथा परिवार के सभी जनों का आशिर्वाद मेरे साथ था । अतः उन सभी को मैं अपनी श्रद्धा प्रकट करता हूँ । मेरे सहपाठियों का भी आभारी हूँ, जिनकी शुभ कामनाएँ इस कार्य के साथ थी ।

शोध - कार्य पूरा करने के लिए मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर तथा श्री संत गाडगेबाबा कॉलेज के पुस्तकालयों से ग्रंथ प्राप्त किये हैं । अतः शिवाजी विश्वविद्यालय ग्रंथालय के ग्रंथपाल डॉ. जे. बी. जाधव, सहायक ग्रंथपाल एस्. एन्. जाधव तथा पी. एस. शितोळे जे. के. कवाले आदि के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ ।

आर्टिस्ट श्री तानाजी जाधव , के सहृदय सहायता के प्रति आभार प्रकट करता हूँ । अंत मे इस लघु शोध प्रबंध को यथा शीघ्र एवं सुचारु रुप से टंकित रुप देने का काम करने वाले सौ. सीमा वि. मंगळवेढे, के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ ।

इसी के साथ ही मैं अपना यह लघु शोध - प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ आप के आवलोकन के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

श्री एस्. वाय्. शिंदे
शोध छात्र

कोल्हापुर
दिनांक :: मई 1993